



रीवा पठार में फसलों के उत्पादन का भौगोलिक अध्ययन

विकाश दुवे

शोधार्थी भूगोल

शासकीय संजय गाँधी स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

डॉ. के.एस. नेताम

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष भूगोल

शासकीय संजय गाँधी स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

सारांश –

भारत के मध्य भाग में स्थित रीवा पठार एक ऐसा क्षेत्र है जो अपनी महत्वपूर्ण कृषि गतिविधियों के लिए जाना जाता है। यह अध्ययन रीवा पठार में फसल उत्पादन के भौगोलिक पहलुओं की पड़ताल कर इसके महत्व, चुनौतियों और संभावनाओं पर प्रकाश डालता है। रीवा पठार मध्य प्रदेश राज्य में स्थित एक विशाल ऊँचा भू-भाग है। इसकी विशेषता इसका लहरदार भूभाग है, जिसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 300 से 600 मीटर तक है। पठार कई नदियों और झरनों द्वारा विच्छेदित है, जो कृषि गतिविधियों के लिए आवश्यक जल संसाधन प्रदान करते हैं। इस क्षेत्र की जलवायु को उपोष्ण कटिबंधीय के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें गर्म ग्रीष्मकाल और हल्की सर्दियाँ होती हैं, जो इसे विभिन्न फसलों के लिए उपयुक्त बनाती है। रीवा पठार में कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, फसल उत्पादन स्थानीय आबादी का प्राथमिक व्यवसाय है। यह क्षेत्र गेहूँ, चावल, दालें और तिलहन सहित विविध प्रकार की फसलों की खेती के लिए जाना जाता है। कृषि क्षेत्र न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करता है बल्कि क्षेत्र की खाद्य सुरक्षा और समग्र आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।



मुख्य शब्द – रीवा पठार, फसल उत्पादन, खाद्य सुरक्षा और समग्र आर्थिक विकास।

प्रस्तावना –

कृषि अध्ययन के क्षेत्र में, रीवा पठार क्षेत्र में फसल उत्पादन और पोषण स्तर का भौगोलिक विश्लेषण करना अत्यधिक महत्व रखता है। इस लेख का उद्देश्य उन विभिन्न कारकों का पता लगाना है जो इस भौगोलिक क्षेत्र में फसल की पैदावार और पोषक तत्व सामग्री को प्रभावित करते हैं। रीवा पठार क्षेत्र में फसल उत्पादन का अध्ययन करते समय विचार करने योग्य प्रमुख पहलुओं में से एक खेती का समय है। जलवायु परिस्थितियाँ खेती के लिए विभिन्न फसलों की उपयुक्तता निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मानसून का मौसम, जो आमतौर पर जून से सितंबर तक रहता है, इष्टतम फसल वृद्धि के लिए आवश्यक वर्षा प्रदान करता है।

रीवा जिले का भू-क्षेत्र सामान्यतः समतल और ऊँचा-नीचा दृष्टिगोचर होता है। भौतिक तथा धरातलीय दृष्टि से यह क्षेत्र विन्ध्यन उच्च भूमि के अन्तर्गत आता है। इस उच्च भूमि का विस्तार पश्चिम में आरावली पर्वत से पूर्व में छोटा नागपुर पठार तक है। रीवा पठार जिले के भौतिक धरातल में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जिले का धरातलीय ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है। उत्तरी मैदान क्षेत्र का ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। जिले के पूर्वी भाग में ढाल दक्षिण पूर्व से पश्चिमोत्तर है। विन्ध्य पहाड़ रीवा जिले को प्रमुख दो भाग में विभाजित करता है – (1) तरिहार और (2) उपरिहार। मध्य विन्ध्य पहाड़ के उत्तरी भाग को तरिहार कहा जाता है। जबकि दक्षिणी भाग को उपरिहार कहा जाता है। दोनों पहाड़ों के इर्द-गिर्द की जमीन कंकड़ीली व पथरीली है। किन्तु मैदानी भाग की भूमि अत्यन्त उपजाऊ है। मिट्टी लाल हो या काली। समुद्र तल से अधिकतम ऊँचाई 750 मीटर है। औसत लगभग 300 मीटर है। इस प्रकार रीवा जिले को भौगोलिक अध्ययन के आधार पर मुख्य चार भागों में विभाजित किया जाता है, ये निम्नलिखित हैं –

- (1) उत्तर का निचला मैदान,
- (2) विन्ध्य का पहाड़ी क्षेत्र,
- (3) रीवा का पठार,
- (4) कैमूर पहाड़ी।

(1) उत्तर का निचला मैदान – विन्ध्य पहाड़ी के निचले भाग में 984 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में उत्तर की ओर समतल मैदान है। मैदान का निर्माण नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टी से हुआ है जो बहुत उपजाऊ है। क्षेत्र को सिंचित बनाया गया है, जिसमें व्यापक तौर पर उन्नत किस्म की खेती की जाती है।

(2) विन्ध्य का पहाड़ी क्षेत्र – रीवा जिले में विन्ध्य श्रेणियाँ लगभग 25 किलोमीटर की लम्बाई एवं 7–9 किलोमीटर की चौड़ाई में फैली हैं। इस क्षेत्र की ऊँचाई पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः कम होती जाती है। विन्ध्य की औसत ऊँचाई 382 मीटर है। विन्ध्य श्रृंखलाएँ जल की अपरदन क्रिया से प्रभावित हैं। जहाँ से विस्तृत मैदान का अन्त होता है। उस क्षेत्र में नदियाँ अनेक बड़े जल प्रपात बनाती हुई आगे बढ़ती हैं। इन प्रपातों में पुरवा, चचाई, क्यौंटी, बहुती तथा बिलौही आदि प्रमुख हैं। चचाई जल प्रपात में टोन्स जल विद्युत परियोजना द्वारा विद्युत उत्पन्न की जाती है। सम्पूर्ण पर्वतीय भाग विन्ध्य श्रेणी के नाम से जाना जाता है।

(3) रीवा का पठार – विन्ध्य व कैमूर पहाड़ी क्षेत्र के बीच का भाग रीवा पठार है, जिसमें टोंस, बीहर, महाना तथा ओड्डा नदियाँ प्रवाहित होती हैं। आस-पास के क्षेत्र से ऊँचा दिखाई देता है। लेकिन यह पठार मध्य भाग में समतल है। पठार के उत्तरी छोर में अनेक छोटे-बड़े जल प्रपात हैं, जो पर्यटन को बढ़ावा देते हैं।

(4) कैमूर का पहाड़ी क्षेत्र – यह पहाड़ी पूर्व से पश्चिम में रीवा जिले के दक्षिणी सीमा में फैली हुई है। जिसकी लम्बाई 108 किलोमीटर एवं चौड़ाई 4 से 12 किलोमीटर तक है। इस श्रेणी की नदी घाटियाँ गहरे एवं तीव्र ढाल वाली हैं। जिले की अधिकांश नदियाँ (जिसमें तमसा, बिछिया, अदवा आदि) इसी से निकलती हैं।

विश्लेषण –

भारत के मध्य प्रदेश राज्य में स्थित रीवा पठार अपनी समृद्ध कृषि परंपरा और विविध फसल उत्पादन के लिए जाना जाता है। अपनी अनूठी भौगोलिक विशेषताओं और जलवायु के साथ, यह क्षेत्र इस वातावरण में पनपने वाली विभिन्न प्रकार की फसलों का केंद्र बन गया है। रीवा पठार की जलवायु इस क्षेत्र में उगाई जाने वाली फसलों के प्रकार को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पठार में अलग-अलग गीले और सूखे मौसम के साथ उष्णकटिबंधीय जलवायु का अनुभव होता है, जो फसल की खेती के समय और सफलता को प्रभावित करता है। रीवा पठार की मिट्टी की संरचना फसल उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। क्षेत्र की उपजाऊ मिट्टी पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करती है और यहाँ उगाई जाने वाली फसलों की समग्र गुणवत्ता में योगदान करती है।

रीवा पठार की विविध स्थलाकृति, जिसमें पहाड़ियाँ, घाटियाँ और मैदान शामिल हैं, वर्षा और सूर्य के प्रकाश के वितरण को प्रभावित करती हैं, जो फसल विकास के लिए आवश्यक हैं। रीवा पठार में उगाई जाने वाली फसलों की विविध श्रृंखला इस क्षेत्र में उत्पादित भोजन की पोषण विविधता में योगदान करती है। अनाज और दालों से लेकर फलों और सब्जियों तक, यहाँ उगाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की फसलें आवश्यक पोषक

तत्वों का एक समृद्ध स्रोत प्रदान करती हैं। रीवा पठार में जैविक खेती और फसल चक्र जैसी पारंपरिक कृषि पद्धतियों का उपयोग, यहाँ उगाई जाने वाली फसलों के पोषण स्तर में योगदान देता है। ये प्रथाएँ मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और उत्पादित भोजन में पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाने में मदद करती हैं। क्षेत्र में टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने और फसल की गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से सरकार की पहल का रीवा पठार में उगाई जाने वाली फसलों के पोषण स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड और फसल बीमा जैसी योजनाओं ने किसानों को बेहतर फसल पोषण के लिए आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाने में मदद की है।

रीवा पठार मध्य प्रदेश राज्य के मध्य-उत्तरी भाग में स्थित है और यहाँ कृषि एक महत्वपूर्ण आधारीक व्यवसाय है। इस क्षेत्र में विभिन्न फसलों का उत्पादन किया जाता है और उनका भौगोलिक अध्ययन करने से हम यह समझ सकते हैं कि कैसे भौगोलिक तत्व जैसे जलवायु, मिट्टी, नदी सिंचाई, और भौतिक संसाधनों का उपयोग फसलों के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रीवा पठार में विभिन्न फसलों की विशेष प्रजातियों का उत्पादन किया जाता है, जो मुख्य रूप से उसकी जलवायु, मिट्टी, और सिंचाई की स्थिति पर निर्भर करती हैं।

गेहूँ : रीवा पठार में गेहूँ की उत्पादन काफी अच्छा होता है। यह फसल ठंडी सर्दियों की जलवायु में अच्छे अनुकूल होती है और मिट्टी के रेतीले भागों में भी उत्पादन करने के लिए उपयुक्त होती है।

चावल : रीवा पठार के कुछ क्षेत्रों में चावल की खेती भी प्रमुख है, विशेष रूप से जहाँ उच्च वर्षा की मात्रा होती है। इसकी खेती में बारिश के सीजन में सिंचाई की जरूरत होती है।

मक्का : मक्का की खेती भी रीवा पठार में महत्वपूर्ण फसल है, विशेष रूप से गर्मियों में उत्पादन किया जाता है। यहाँ की मिट्टी और जलवायु मक्के की खेती के लिए उपयुक्त होती है।

धान : धान की खेती भी रीवा पठार में की जाती है। इसमें मसूर, अरहर, चना, उड़द, और मूंग जैसी प्रमुख फसलें शामिल होती हैं। यहाँ की मिट्टी और जलवायु धान की उन्नत खेती के लिए उपयुक्त हैं।

फसल उत्पादन को प्रभावित करने वाले कारक : कई भौगोलिक कारक रीवा पठार में फसल उत्पादन को प्रभावित करते हैं। जल संसाधनों की उपलब्धता, मिट्टी की उर्वरता, स्थलाकृति और जलवायु क्षेत्र में सफलतापूर्वक उगाई जा सकने वाली फसलों के प्रकार को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, तकनीकी प्रगति, सिंचाई सुविधाएँ और किसानों द्वारा अपनाई गई कृषि पद्धतियाँ भी फसल की पैदावार और उत्पादन क्षमता को प्रभावित करती हैं।

फसल विविधता और मौसमी विविधताएँ : रीवा पठार अपनी अनुकूल जलवायु और मिट्टी की स्थिति के कारण, पूरे वर्ष उगाई जाने वाली फसलों की समृद्ध विविधता को प्रदर्शित करता है विभिन्न मौसमों में विभिन्न फसलों की खेती की जाती है, जिनमें खरीफ और रबी फसलें सबसे प्रमुख हैं। चावल, मक्का और सोयाबीन जैसी खरीफ फसलें मानसून के मौसम में बोई जाती हैं, जबकि गेहूँ और चना जैसी रबी फसलें सर्दियों के महीनों के दौरान बोई जाती हैं। फसल की खेती में यह मौसमी बदलाव कृषि उत्पादन को अधिकतम करने और भूमि उपयोग को अनुकूलित करने में मदद करता है।

फसल उत्पादन में चुनौतियाँ : अपनी कृषि क्षमता के बावजूद, रीवा पठार को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो फसल उत्पादन और कृषि विकास में बाधा बनती हैं। अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ, अनियमित वर्षा पैटर्न, मिट्टी का कटाव, कीटों का संक्रमण और आधुनिक कृषि तकनीकों की कमी इस क्षेत्र के किसानों के सामने आने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं। ये कारक अक्सर फसल की पैदावार में कमी, फसल की विफलता और कृषक समुदाय के लिए आर्थिक नुकसान का कारण बनते हैं।

सरकारी हस्तक्षेप और समर्थन : रीवा पठार में कृषि के महत्व को पहचानते हुए, सरकार ने किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए विभिन्न हस्तक्षेप और सहायता कार्यक्रम लागू किए हैं। सब्सिडी वाले बीज, उर्वरक, सिंचाई सुविधाएँ, फसल बीमा योजनाएँ और विस्तार सेवाओं का प्रावधान जैसी पहल का उद्देश्य कृषि उत्पादकता को बढ़ाना, किसानों की आजीविका में सुधार करना और क्षेत्र में टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना है।

भविष्य की संभावनाएँ और सतत कृषि : भविष्य की ओर देखते हुए, टिकाऊ कृषि रीवा पठार में फसल उत्पादन के भविष्य की कुंजी है। जैविक खेती, जल संरक्षण, फसल विविधीकरण और जलवायु-लचीली कृषि

पद्धतियों को अपनाने को बढ़ावा देकर, क्षेत्र दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा, पर्यावरणीय स्थिरता और आर्थिक समृद्धि सुनिश्चित कर सकता है। रीवा पठार में कृषि की पूर्ण क्षमता का एहसास करने के लिए किसानों, सरकारी एजेंसियों, कृषि विशेषज्ञों और हितधारकों को शामिल करने वाले सहयोगात्मक प्रयास आवश्यक हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रीवा पठार में फसल उत्पादन और पोषण स्तर का भौगोलिक अध्ययन इस बात की बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है कि पर्यावरणीय कारक क्षेत्र में कृषि को कैसे प्रभावित करते हैं। जलवायु, मिट्टी की गुणवत्ता और फसल विविधता के बीच अंतरसंबंध को समझकर, हम स्थानीय समुदाय के लिए पौष्टिक भोजन का उत्पादन सुनिश्चित करने में टिकाऊ कृषि प्रथाओं के महत्व को बढ़ा सकते हैं। रीवा पठार में फसल उत्पादन का भौगोलिक अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और आजीविका में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। चुनौतियों का समाधान करके, अवसरों का उपयोग करके और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाकर, रीवा पठार अपनी पूर्ण कृषि क्षमता प्राप्त करता है और क्षेत्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

संदर्भ –

1. त्रिपाठी, गुलाब कली (1994) – रीवा पठार का ग्रामीण अधिवास, भूगोल, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), पृष्ठ 167.
2. शर्मा, श्री कमल (1987) – औद्योगिक भूगोल, प्रथम संस्करण, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल (म.प्र.), पृष्ठ 53.
3. कुशवाहा, रामगोपाल (2003) – जनसंख्या वृद्धि एवं वर्तमान आहार स्तर, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, गोरखपुर, अंक 26, जून–दिसम्बर 2003, पृष्ठ 28.
4. पंडा, बी.पी. (1991) – जनसंख्या भूगोल, द्वितीय संस्करण, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, भोपाल, पृष्ठ 78.
5. सिंह, जीवन (1931) – रीवा राज्य दर्पण, प्रयाग प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 38.
6. सी.ई., लुआई (1908) – इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, सोलहवां संस्करण, कलकत्ता, पृष्ठ 281.
7. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, वर्ष 2013–14, जिला सांख्यिकीय एवं योजना कार्यालय, रीवा (म.प्र.)
8. धरातल पत्रक (स्थलाकृतिक मानचित्र), 63 जी.एच., सर्वे ऑफ इण्डिया।